महिला सशक्तिकरण में हिंदी लेखिकाओं का योगदान

प्रा.अजय महेंद्र कांबळे स.प्राध्यापक हिंदी विभाग कमला कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त) ईमेल - ak6424515@gmail.com

---

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में महिलाओं का प्रवेश एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया रही है क्योंकि ऐतिहासिक रूप से साहित्यिक क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व रहा है। आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक स्त्री को एक भोग का साधन समझा जाता था। इसके बावजूद महिला लेखिकाओं ने अपनी प्रतिभा, संघर्षशीलता और सृजनात्मक क्षमता के बल पर एक सशक्त पहचान स्थापित की। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर वर्तमान समय तक महिला साहित्यकारों ने समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने, उनकी आवाज को बुलंद करने और नई पीढ़ी को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाई है।

बीज शब्द – साहित्य, सशक्तिकरण, महिला, समस्या

परिचय :

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता, सम्मान और अवसरों के प्रति जागरूक करना ताकि वे अपने जीवन के फैसले स्वतंत्र रूप से ले सकें और समाज में समान स्थान प्राप्त कर सकें। यह एक वैश्विक आंदोलन है जिसका उद्देश्य न केवल महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा करना है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि महिलाएं अपने जीवन की दिशा तय करने में सक्षम हों। भारतीय समाज में लंबे समय तक महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम समझा गया और उनके अधिकारों पर सवाल उठाए गए लेकिन साहित्य ने हमेशा महिलाओं के संघर्ष और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे "पिछली शताब्दी के प्राद्योगिक एव आर्थिक परिवर्तन के कारण न केवल सुस्थापित कार्य प्रणाली ही बदली बल्की सोचने और कार्य करणे की प्राचीन प्रवृत्ती भी समाप्त हो गई, परिणाम स्वरूप स्त्री दृष्टीकोन में भी बदलाव आए और उसकी स्वयंम की अवधारणा को भी बल मिला।"[१] विशेष रूप से हिंदी साहित्य में कई लेखिकाओं ने महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को अपने लेखन के माध्यम से उठाया है और उनका योगदान समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

महिला सशक्तिकरण और हिंदी साहित्य :

हिंदी साहित्य में कई लेखिकाओं ने महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया है। इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के जरिए न केवल महिलाओं के दर्द और संघर्ष को सामने रखा बल्कि उन्होंने महिलाओं को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में हिंदी साहित्य में योगदान देने वाली लेखिकाओं ने महिलाओं को आत्मनिर्भर, आत्मसम्मानित और समान अवसर प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

जैसे "खूब लडी मर्दानी वह तो झांसीवाली रानी थी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की नजर में लडना, वीरता, शोर्य प्रदर्शन पुरुषो का ही काम न था इसलिए उन्होने महाराणी लक्ष्मीबाई के शौर्य पर कविता लिखते वक्त मर्दानी शब्द का प्रयोग किया है।"[२] वे साहित्य के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि महिलाओं को अपने अस्तित्व की पहचान होनी चाहिए और उन्हें समाज में अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए संघर्ष करना चाहिए। उनका साहित्य महिलाओं अपनी अस्मिता से लड़ने की एक नई दिशा प्रदान करता है। भारतीय समाज के घिसे-पीटे रूढीयों और रिवाजों को तोड़ने का यह जद्दोजहद और स्त्री को एक मनुष्य के रूप में स्थापित करने का यह संघर्ष इन महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

हिंदी की प्रमुख महिला साहित्यकार :

- महादेवी वर्मा : नारीवाद की प्रतीक

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका थीं, जिनका योगदान महिला सशक्तिकरण में अतुलनीय है। उन्हें भारतीय साहित्य में 'Modern Meera' के रूप में जाना जाता है। उनकी कविताएँ न केवल उनकी व्यक्तिगत भावनाओं का आदान-प्रदान करती थी बल्कि वे समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों पर भी टिप्पणी करती थीं। महादेवी वर्मा ने नारी के आत्मसम्मान, शिक्षा, और स्वतंत्रता की आवश्यकता पर बल दिया। उनकी कविताएँ महिला मनोविज्ञान और उनके संघर्षों की गहरी समझ को दर्शाती हैं।

"मै नीर भरी दुख कि गगरी
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होता

परिचय इतना इतिहास यही"[३]

महादेवी वर्मा की रचनाओं में १९२०-२५ के आस-पास के नारी व्यवस्था का बयान अपनी इस काव्य मे दृष्टिगोचर होता है। साथ ही महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का स्पष्ट चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी कविताओं और ग़ज़लों के माध्यम से यह बताया कि महिलाओं को न केवल समाज में समान अवसर मिलने चाहिए, बल्कि उन्हें खुद को समाज के सामने सम्मानपूर्वक पेश करने की भी आवश्यकता है। उनको साहित्य का सबसे बडा 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' १९८२ में 'यामा' काव्य संग्रह के लिए प्राप्त हुआ। उनके लेखन ने भारतीय समाज में महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाया और यह सिद्ध किया कि महिलाएँ पुरुषों के समान और सक्षम हैं।

- **इस्मत चुगताई : समाज की बेड़ियाँ तोड़ती लेखिका**

इस्मत चुगताई हिंदी साहित्य की एक महान लेखिका थीं जिनका योगदान महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में अद्वितीय था। उनका लेखन समाज की रूढ़िवादी सोच और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ था। उनकी रचनाएँ महिलाओं की यौन स्वतंत्रता, उनकी मानसिक और शारीरिक स्थिति, और समाज में उनके स्थान को लेकर कई महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करती हैं। चुगताई ने महिलाओं की समस्याओं को खुले तौर पर उजागर किया और उनके अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई।

उनकी काव्य रचनाएँ और कहानियाँ जैसे 'लिहाफ', महिलाओं के यौन उत्पीड़न और उनके शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता की आवश्यकता पर बल देती हैं। चुगताई ने अपनी लेखनी से यह संदेश दिया कि महिलाओं को अपनी स्वतंत्रता के लिए खड़ा होना होगा और समाज की गलत धारणाओं को नकारना होगा। उनका लेखन महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने में प्रभावी रहा है।

- **मृदुला गर्ग : महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर विचारशील लेखिका**

मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य में महिला सशक्तिकरण की एक और प्रमुख लेखिका है। जिनका लेखन समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए प्रेरणादायक है। उनकी रचनाएँ समाज में व्याप्त असमानताओं को चुनौती देती हैं और महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करती हैं। मृदुला गर्ग ने अपने लेखन में न केवल महिलाओं के मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न की समस्या को उठाया बल्कि उन्होंने यह भी दिखाया कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि महिलाओं को समाज में समान स्थान मिलना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त किया जाना चाहिए। वे कहती है की "पती की आय में पत्नी की हिस्सेदारी नहीं है,और संबध विच्छेद होने पर उसके बच्चों के भरण पोषण का उचित प्रावधान नहीं है,पैतृक संपत्ती में भी उसका बराबर का हिस्सा नही है। किसान-स्त्री उत्पादन का पुरा काम करते हुए भी खेत जमीन कि मालकीन नहीं होती यानी कानून स्त्री को खुद अपने घर में हिस्सेदार नही मानता ऐसी अनेक कामियां कानुनो में भी है।"[४] मृदुला गर्ग के लेखन ने यह सिद्ध किया कि महिलाओं को सिर्फ उनके घर के दायरे तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि उन्हें समाज के हर क्षेत्र में समान अधिकार मिलना चाहिए।

- **कृष्णा सोबती : नारीवादी दृष्टिकोण से लेखन**

कृष्णा सोबती का लेखन नारीवादी दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी कविताओं और लेखन में स्त्री के संघर्ष, उसके अधिकारों की बात और सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने की स्पष्ट आवाज़ सुनाई देती है। उनका लेखन न केवल स्त्री को एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में प्रस्तुत करता है बल्कि वह नारी के अनुभवों को सशक्त रूप में व्यक्त करता है। कृष्णा सोबती ने अपनी कविताओं और निबंधों में पुरुषप्रधान समाज द्वारा स्त्री पर लगाए गए बंधनों और दमन को उजागर किया है। वे यह मानती हैं कि समाज में स्त्री की पहचान हमेशा पुरुष के संदर्भ में बनाई जाती है, और इसे बदलने के लिए महिलाओं को अपनी आवाज़ बुलंद करनी चाहिए। उनका लेखन महिलाओं के अधिकारों, उनके शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता की परिभाषा पर सवाल उठाता है।

उनकी प्रमुख कविता "बिचारा आदमी" में पुरुषों की मानसिकता और उनके दृष्टिकोण को चुनौती दी गई है। इसके अलावा कृष्णा सोबती ने महिलाओं के दुःख और उनकी सामाजिक स्थिति को शब्दों में उतारते हुए उनकी स्वतंत्रता की बात की है। उनके लेखन में एक गहरी सामाजिक जागरूकता और नारी की अस्मिता की खोज दिखाई देती है। नारीवादी दृष्टिकोण से उनका लेखन उस समय की परंपराओं और आदतों को नकारते हुए महिलाओं के लिए नए रास्ते खोलने की दिशा में काम करता है। उनके विचार और शब्द समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए एक प्रेरणा का काम करते हैं।

- **मन्नू भंडारी : महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष**

मन्नू भंडारी भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण लेखिका हैं, जिनका लेखन महिलाओं के अधिकारों और उनकी समस्याओं पर केंद्रित है। मन्नू भंडारी ने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबंधों के माध्यम से महिलाओं की मानसिकता, उनके

अधिकारों, उनके संघर्षों और समाज में उनके स्थान पर गहरी सोच और संवेदनशीलता दिखाई है। उनकी लेखनी ने न केवल महिलाओं की समस्याओं को उजागर किया बल्कि समाज की स्त्री विरोधी सोच पर भी प्रहार किया।

मन्नू भंडारी का लेखन नारीवादी दृष्टिकोण से भरा हुआ है, जो आधुनिक समाज में महिलाओं के स्थान, उनके अधिकारों और उनके स्वतंत्र विचारों को प्रोत्साहित करता है। उनका लेखन समाज में बदलाव की आवश्यकता पर बल देता है और यह सुझाव देता है कि महिलाओं को केवल परिवार या समाज के निर्धारित ढांचे के भीतर नहीं बल्कि एक स्वतंत्र और समान इंसान के रूप में सम्मान मिलना चाहिए।

सारंशत:

मन्नू भंडारी का लेखन नारीवादी दृष्टिकोण से महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष को एक मजबूत और स्पष्ट आवाज़ प्रदान करता है। उनके लेखन में समाज की रूढ़िवादी सोच को चुनौती दी जाती है और महिलाओं को आत्मनिर्भर, सशक्त और स्वतंत्र बनाने की आवश्यकता को उजागर किया जाता है।

- **निष्कर्ष:**

हिंदी साहित्य में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में कई लेखिकाओं का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इन लेखिकाओं ने न केवल समाज में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए लिखा बल्कि उन्होंने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी किया। महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई, मृदुला गर्ग, मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि महिलाओं को समाज में समान अधिकार मिलने चाहिए और उन्हें हर क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए संघर्ष करना चाहिए। इन लेखिकाओं का योगदान आज भी हमें यह सिखाता है कि महिलाओं का सशक्तिकरण केवल समाज में उनकी स्थिति सुधारने के लिए नहीं, बल्कि यह समाज में समानता, न्याय और मानवाधिकारों के लिए आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ :

१) कौर बलवंद, स्त्री विमर्श-कृतियो में आकृतीयां, हंस, मार्च -२००० पृ.सं .९३
२) आर्य अल्का, वीरता कोई खुशबू नही- बंद गलीयो के विरुद्ध, पृ.सं .५३
३) वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कडियॉ, राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.सं ६८
४) गर्ग मृदुला, चुकते नही सवाल, पृ.सं.७०